यहBISHOP SCOTT BOYS' SCHOOL
(Affiliated to CBSE, New Delhi) Affiliation No.: 330726, School Campus: Chainpur, Jaganpura, By-Pass, Patna 804453.
Phone Number: 7061717782, 9798903550. ,
Web: www.bishopscottboysschool.com Email: info@bishopscottboysschool.com

ONLINE STUDYMATERIAL

SUBJECT-Hindi

SESSION-2020-21

CLASS- 6

पाठ-3सादगी की मूरत

DAY-1

❖ लेखिका परिचय:-महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फ़र्रुखाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनकी गिनती सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में होती है। उन्हें 'आधुनिक मीराबाई'भी कहा जाता है। महादेवी जी की रचना 'यामा' के लिए उन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार'प्रदान किया गया था। 'निहार', 'रश्मि', 'सांध्य गीत', 'भारत भारती'आदि उनकी अन्य प्रमुख रचनाएं हैं।

पाठ की भूमिका:--

'सादा जीवन उच्च विचार'किसी महापुरुष के जीवन का यही गुरुमंत्र होता है। हमारे देश में कई महानुभावों ने जन्म लिया जिनमें से हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद। परंतु संस्मरण उन्हीं के प्रेरणादायी जीवन से जुड़ा है।

निहितजीवन-मूल्य:--*सादगी, कर्तव्यपरायणता, अपनत्व का भाव।

❖DAY-2सारांश:---

प्रस्तुत पाठ सादगी की मूरत महादेवी वर्मा द्वारा रचित संस्मरण है। इस पाठ में उन्होंने हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद एवं उनकी पत्नी से संबंधित यादों का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है। डॉ राजेंद्र प्रसाद राष्ट्रपति होते हुए भी अपनी आकृति तथा वेशभूषा के समान ही वे अपने स्वभाव और रहन-सहन में सामान्य भारतीय कृषक का ही प्रतिनिधित्व करते थे। प्रतिभा और बुद्धि की विशिष्टता के साथ साथ उन्हें जो गंभीर संवेदना प्राप्त हुई थी, वही उनके सामान्य व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करती थी।। लेखिका जब प्रयाग में बीए की छात्रा थी और शीतावकास में अपने घर भागलपुर जा रही थी। उसी दौरान पटना स्टेशन पर उन्होंने डॉ राजेंद्र प्रसाद को देखा था। परंतु राजेंद्र बाबू के निकट संपर्क में आने का अवसर उन्हें सन 1935 में मिला मिला जब वे कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में इलाहाबाद महिला विद्यापीठ के भवन का शिलान्यास करने प्रयाग आए थे ।उन्हें यह भी पता चला कि डॉ राजेंद्र प्रसाद 15- 16पौत्रियां हैं। जिनकी पढ़ाई की व्यवस्था महादेवी वर्मा के छात्रावास में की गई। जब भी वह लड़कियां अपने घर से मिठाइयां इत्यादि लाती

थी।।उसका वितरण सबों में होता था। डॉ राजेंद्र प्रसाद के समान है उनकी पत्नी बिहार के जमींदार परिवार की बहू एवं स्वतंत्रता संग्राम के और अपराजेय सेनानी की पत्नी होने पर भी उन्हें कभी अहंकार ना हुआ।। वे सच्चे अर्थ में धरती की पुत्री थी। साध्वी, सरल, क्षमामयी और सब के प्रति ममतामयी ।

एक बार की घटना को याद करते हुए लेखिका लिखती हैं कि जब डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद की पत्नी ने उन्हें दिल्ली आने का विशेष निमंत्रण दिया तो उन्होंने लेखिका से प्रयाग की बनी एक दर्जन सिरकी के बने सूप लाने का भी आदेश दिया। राष्ट्रपति की पत्नी होने के बावजूद भी डॉ राजेंद्र प्रसाद की पत्नी स्वयं भोजन बनाती थी एवं भारतीय गृहिणी के समान पति, परिवार तथा परिजनों को खिलाने के उपरांत स्वयं अन्न ग्रहण करती थी। राजेंद्र बाबू तथा उनकी सहधर्मिणी सप्ताह में 1 दिन अन्न ग्रहण नहीं करते थे। लेखिका आज भी वह संध्या नहीं भूलती जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति को सामान्य आसन पर बैठकर दिन भर के उपवास के उपरांत केवल कुछ उबले आलू खाकर परायण करते देखा।जीवन- मूल्यों की परख वाली दृष्टि के कारण उन्हें देशरत्न की उपाधि मिली।मन की सरल स्वच्छता ने उन्हें अजातशत्रु बना दिया ।

❖DAY-3 काठिन्य निवारण:-

1. शीतावकाश-सर्दियों की छुट्टियां
2. स्मृति-याद
3. मुखाकृति-चेहरे की बनावट
4. अनुभूति-महसूस या अनुभव करने का भाव
5. कृषक-किसान
6. गरिमा-गर्व होने का भाव
7. शिलान्यास-भवन आदि का काम शुरू करने के लिए नींव रखना
8. सहधर्मिणी-पत्नी
9. अपराजेय-जो कभी पराजित ना हो सके
10. कोलाहल-शोर
11. प्राप्य-प्राप्त करने योग्य
12. संलग्न-साथ में जुड़ा हुआ
13. आतिथ्य-अतिथि का सत्कार
14. सूप-अनाज फटकने के लिए बांस से बना एक पात्र
15. विस्मय-आश्चर्य
16. जिज्ञासा-जानने की इच्छा
17. आतिथेय-अतिथि का सत्कार करने वाला
18. निरन्न-बिना अन्न खाए
19. परायण-फल या भोजन खाकर व्रत समाप्त करने का कार्य

❖DAY-4 मौखिक कौशल:-

1.लेखिका कहां जा रही थी?

उत्तर-लेखिका अपने घर भागलपुर जा रही थी।

2. राजेंद्र बाबू कहां बैठे हुए थे?

उत्तर-राजेंद्र बाबू प्लेटफ़ॉर्म पर एक ओर बेंच पर बैठे हुए थे।

3. राजेंद्र बाबू को पहली बार देखने वाले व्यक्ति को क्या अनुभव होता था?

उत्तर-राजेंद्र बाबू को पहली बार देखने वाले व्यक्ति को यह अनुभव होता होगा कि किसी हड़बड़ी में चलते चलते कपड़े पहन आए हैं।

4. स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?

उत्तर-स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद थे।

5. राजेंद्र बाबू की पत्नी ने लेखिका से क्या लाने को कहा था?

उत्तर-राजेंद्र बाबू की पत्नी ने लेखिका से सिरकी का सूप लाने को कहा था।

❖DAY-5 लिखित कौशल:--

1. लेखिका को राजेंद्र बाबू का अभिवादन करने का ध्यान कब आया?

उत्तर-भाई से यह जानने के उपरांत कि उक्त सज्जन भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद हैं, लेखिका को उनके अभिवादन का ध्यान आया।

2. लेखिका ने राजेंद्र बाबू की वेशभूषा का वर्णन किस प्रकार किया है ?

उत्तर-लेखिका के अनुसार राजेंद्र बाबू की वेशभूषा में ग्रामीणता तो दृष्टि को उलझा देती थी। खादी की मोटी धोती, मोटे, खुरदरे, काले बंद गले का कोर्ट के ऊपर वाला भाग बटन टूट जाने के कारण खुला था और घुटने के नीचे का भाग बटनो से बंद था। पैरों में मौजे जूते तो थे पर एक मौजा जूते पर उतर आया था। गांधी टोपी उनके सिर पर थी।

3. वह कौन- सी बातें थीं जो राजेंद्र बाबू के सामान्य व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करती थीं?

उत्तर-प्रतिभा और बुद्धि की विशिष्टता के साथ साथ उन्हें जो गंभीर संवेदना प्राप्त हुई थी, वही उनके सामान्य व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करती थी।

4. लेखिका को डॉक्टर राजेंद्र बाबू के निकट संपर्क में आने का अवसर कब मिला?

उत्तर-लेखिका को राजेंद्र बाबू के निकट संपर्क में आने का अवसर सन् 1935में मिला जब वे कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में इलाहाबाद महिला विद्यापीठ के भवन का शिलान्यास करने प्रयाग आए।

5. छात्रावास की बालिकाओं के साथ राजेंद्र बाबू की पत्नी का व्यवहार कैसा था?

उत्तर-छात्रावास की सभी बालिकाओं था उन्हें समान रूप से ध्यान रहता था। एक दिन या कुछ घंटे ठहरने पर भी वे सबको बुला- बुला कर उनकी तथा उनके परिवार की कुशल -मंगल पूछना ना भूलती थी।

6. बालिकाओं के संबंध में राजेंद्र बाबू ने लेखिका को क्या निर्देश दिया था?

उत्तर-बालिकाओं के संबंध में राजेंद्र बाबू का स्पष्ट निर्देश था कि वे सामान्य बालिकाओं की तरह बहुत सादगी तथा संयम से रहें।

7. सिरकी से बने सूप से संबंधित घटना का उल्लेख अपने शब्दों में करो।

उत्तर-लेखिका को राजेंद्र बाबू की पत्नी ने प्रयाग से बने एक दर्जन सिरकी का सूप लाने का आदेश दिया था। लेखिका जब प्रथम श्रेणी के डिब्बे में चढी बारह सूपों को टांगने पर जो दृश्य उपस्थित हुआ उससे भी अधिक विचित्र दृश्य तब प्रत्यक्ष हुआ जब राष्ट्रपति भवन से आई बड़ी कार पर यह उपहार लादा गया । राष्ट्रपति भवन के हर द्वार पर सलाम ठोंकने वाले सिपाहियों की आंखें विस्मय में से खुली रह गई। ऐसा उपहार लेकर कोई अतिथि ना कभी वहां पहुंचा था, ना पहुंचेगा।पर, भवन की तत्कालीन स्वामिनी ने लेखिका को देखते ही गले से लगा लिया।

8. लेखिका के मन में अनेक बार कौन-सा प्रश्न उठता रहता था?

उत्तर-लेखिका के मन में अनेक बार यह प्रश्न उठता था कि---क्या वह सांचा टूट गया जिसमें ऐसे कठिन, कोमल चरित्र ढलते थे?

Video link

https://youtu.be/c6pRa0Pml_g

https://youtu.be/CBi4mz_KnwY